निरालम्बं उपनिषद्

यह उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद से सम्बन्धित है।
इसमें ब्रह्म, ईश्वर, जीव, प्रकृति, जगत, ज्ञान, कर्म, स्वर्ग–नरक, विद्वान–मूर्ख आदि का विवेचन किया गया है। इसमें कुल चालीस मंत्र है।

ॐ नमः शिवाय गुरवे सच्चिदानन्दमूर्तये। निष्प्रपन्चाय शान्ताय निरालम्बाय तेजसे।
निरालम्बं समाश्रित्य सालम्बं विजहाति यः। स सन्यासी च योगी च कैवल्यं पदमश्नुते।।

उस शिव, गुरु, सच्चिदानन्द स्वरुप को नमस्कार है जो छलरहित, शान्त, आलम्बन रहित, तेज स्वरुप है। जो उस निरालम्ब का आश्रय लेकर सांसारिक आलम्बन का परित्याग कर देता है वह सन्यासी और योगी है और कैवल्य पद (मोक्ष) प्राप्त करता है।

एषाम् अज्ञानजन्तूनां समस्त आरिष्टशान्तये। यत् उद्बोद्धव्यम् अखिलं तद् आशंक्य ब्रवीम्यहम्।।

अज्ञानी जीवों के सभी अरिष्टों (कष्टों) की शान्ति हेतु जो–जो ज्ञान आवश्यक हैं उनकी आशंका करके मै यहां कहता हूँ।

किं ब्रह्म। क ईश्वरः। को जीवः। का प्रकृतिः। कः परमात्मा। को ब्रह्मा। को विष्णुः। को रुद्रः। क इन्द्रः। कः शमनः। कः सूर्यः। कश्चन्द्रः। के सुराः। के असुराः। के पिशाचाः। के मनुष्याः। काः स्त्रियः। के पश्वादयः। किं स्थावरम्। के ब्राह्मणादयः। का जातिः। किं कर्म। किं अकर्म। किं ज्ञानम्। किं अज्ञानम्। किं सुखम्। किं दुःखम्। कः स्वर्गः। को नरकः। को बन्धः। को मोक्षः। क उपास्यः। कः शिष्यः। को विद्वान्। को मूढः। किमासुरम्। किं तपः। किं परमं पदम्। किं ग्राह्यम्। किं अग्राह्यम्। कः संन्यासी इति आशंक आह ब्रह्मेति।।

ब्रह्म क्या है? ईश्वर कौन है? जीव कौन है? प्रकृति क्या है? परमात्मा कौन है? ब्रह्मा कौन है? विष्णु कौन है? रुद्र कौन है? इन्द्र कौन है? शमन करने वाला यम कौन है? सूर्य कौन है? चन्द्र कौन है? देवता कौन है? असुर कौन है? पिशाच कौन है? मनुष्य कौन हैं? स्त्रियां कौन हैं? पशु आदि कौन हैं? स्थावर (अचल) क्या है? ब्राह्मण आदि कौन हैं? जाति क्या है? कर्म क्या है? अकर्म क्या है? ज्ञान क्या है? अज्ञान क्या है? सुख क्या है? दुःख क्या है? स्वर्ग क्या है? नरक क्या है? बन्धन क्या है? मोक्ष क्या है? उपास्य (उपासना योग्य) कौन है? शिष्य कौन है? विद्वान् कौन है? मूर्ख कौन है? असुरत्व क्या है? तप क्या है? परमं पद क्या है? ग्रहणीय क्या है? अग्रणीय क्या है? संन्यासी कौन है? इस प्रकार आशंका व्यक्त करके ब्रह्म का स्वरुप पूछा।

स होवाच महद् अहंकार पृथिवी आपः तेजः वायु आकाशत्वेन बृहद् रुपेण अण्डकोशेन कर्मज्ञानार्थरुपतया भासमानम् अद्वितीयम् अखिल उपाधि विनिर्मुक्तं तत्सकलशक्ति उपबृंहितम् अनाद्यनन्तं शुद्धं शिवं शान्तं निर्गुणं इत्यादिवाच्यं अनिर्वाच्यं चैतन्यं ब्रह्म। ईश्वर इति च। ब्रह्मैव स्वशक्तिं प्रकृति अभिधेयाम् आश्रित्य लोकान्सृष्टवा प्रविश्य अन्तर्यामित्वेन ब्रह्मादीनां बुद्धि इन्द्रिय नियन्तृत्वाद् ईश्वरः।।

उन्होने कहा – ब्रह्म महत् तत्व, अहंकार, पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश से युक्त वृहद् अण्डकोश (ब्रह्माण्ड) स्वरुप, कर्म और ज्ञान के अर्थरुप से प्रतिभाषित होने वाला, अद्वितीय, सम्पूर्ण उपाधियों से रहित (जिसको कोई नाम नहीं दिया जा सकता), सर्वशक्ति सम्पन्न, अनादि एवं अनन्त, शुद्ध, शिव, शान्त, निर्गुण आदि शब्दों से कहा जाने वाला परन्तु फिर भी अनिर्वचनीय, चैतन्य स्वरुप है।

जीव इति च ब्रह्मविष्णु ईशानेन्द्रादीनां नामरुपद्वारा स्थूलोऽहमिति मिथ्याध्यास वशाज्जीवः। सोऽहमेकोऽपि देहारम्भक भेदवशाद् बहुजीवः।।

जीव कौन है? जब चैतन्य स्वरुप ईश्वर को ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र आदि नामों और रुपों द्वारा यह मिथ्या आभास हो जाता है कि मै स्थूल हूं तब उसे जीव कहते हैं। यह चैतन्य 'सोऽहं' स्वरुप में एक होने पर भी शरीरों की भिन्नता के कारण अनेक 'जीव' बन जाता है।

प्रकृतिरिति च ब्रह्मणः सकाशात् नानाविचित्र जगत् निर्माणसामर्थ्य बुद्धिरुपा ब्रह्मशक्तिरेव प्रकृतिः।।

प्रकृति क्या है? ब्रह्म के सानिध्य से चित्र–विचित्र संसार को रचने की सामर्थ्यबुद्धि रुपी ब्रह्म की शक्ति प्रकृति है।

परमात्मेति च देहादेः परतरत्वाद् ब्रह्मैव परमात्मा।।

परमात्मा कौन है? देहादि से परे रहने के कारण ब्रह्म को ही परमात्मा कहते हैं।

स ब्रह्मा स विष्णुः स इन्द्रः स शमनः स सूर्यः स चन्द्रस्ते सुरास्ते असुरास्ते पिशाचास्ते मनुष्यास्ताः स्त्रियस्ते पश्वादयस्तः स्थावरं ते ब्राह्मणादयः।।

यही परमात्मा ब्रह्म, विष्णु, इन्द्र, यम, सूर्य, चन्द्र, देवता, असुर, पिशाच, मनुष्य, स्त्री, पशु आदि, जड़ पदार्थ और ब्राह्मण आदि है।

सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन।।

यह समस्त विश्व ही ब्रह्म है, इसके अतिरिक्त और कुछ भी नही है।

जातिरिति च। न चर्मणो न रक्तस्य न मांसस्य न चास्थिनः। न जातिरात्मनो जातिर्व्यवहारप्रकल्पिता।।

जाति क्या है? जाति शरीर के चर्म, रक्त, मांस, अस्थियों की नही होती। जाति आत्मा की नही होती। जाति की कल्पना केवल व्यवहार के निमित्त की गई है।

कर्मेति च क्रियमाणेन्द्रियैः कर्माणि अहं करोमि इति अध्यात्मनिष्ठतया कृतं कर्मैव कर्म।

कर्म क्या है? इन्द्रियों द्वारा किए जाने वाली क्रियाओं को कर्म कहते हैं। जिस क्रिया को 'मै करता हूं' इस भाव से किया जाता है, वही कर्म है।

अकर्मेति च कर्तृत्वभोक्तृत्वाद् अहंकारतया बन्धरुपं जन्मादिकारणं नित्यनैमित्तिक यागव्रततपोदानादिषु फलाभिसंधानं यत्तद् अकर्म।।

अकर्म क्या है? कर्तापन और भोक्तापन के अहंकार सहित फल की इच्छा से किए गए बंधन को उत्पन्न करने वाले नित्य–नैमित्तिक यज्ञ, व्रत, तप, दान आदि कर्म 'अकर्म' कहलाते है।

ज्ञानमिति देहेन्द्रियनिग्रह सद्गुरु उपासनश्रवणमनन निदिध्यासनैः यद्यद् दृग्दृश्यस्वरुपं सर्वान्तरस्थं सर्वसमं घटपटादि पदार्थम् इवाविकारं विकारेषु चैतन्यं विना किंचिन्नास्तीति साक्षात्कारानुभवो ज्ञानम्।।

ज्ञान क्या है? शरीर और इन्द्रियों पर नियन्त्रण, सद्गुरु की उपासना, श्रवण, मनन, निदिध्यासन (अभ्यास क्रिया) द्वारा जो दृष्ट अथवा अदृष्ट समस्त वस्तुओं में अपरिवर्तनशील चैतन्य तत्त्व विद्यमान है, जो सबके अन्दर विद्यमान रहने पर भी ऐसा प्रतीत होता है मानो वह घट, वस्त्र आदि रुपों में परिवर्तित हो गया है उस चैतन्य तत्त्व की अनुभूति को ज्ञान कहते हैं।

अज्ञानमिति च रज्जौ सर्पभ्रान्तिः इव अद्वितीये सर्व अनुस्यूते सर्वमये ब्रह्मणि देव तिर्यङ् नरस्थावर स्त्रीपुरुष वर्णाश्रमबन्धमोक्षोपाधिनानात्म भेदकल्पितं ज्ञानं अज्ञानम्।।

अज्ञान क्या है? जिस प्रकार रस्सी मे सर्प की भ्रान्ति होती है उसी प्रकार सबमें विद्यमान ब्रह्म में देव, पशु–पक्षी, मनुष्य, स्थावर, स्त्री–पुरुष, वर्ण–आश्रम, बंधन मुक्ति आदि नामों से जानी गई अनात्म वस्तुओं में भेद मानना ही 'अज्ञान' है।

सुखमिति च सच्चिदानन्दस्वरुपं ज्ञात्वानन्दरुपा या स्थितिः सैव सुखम्।।

सुख क्या है? सत्–चित्–आनन्द स्वरुप परमात्मा को जानने से जो आनन्द पूर्ण स्थिति बनती है वही सुख है।

दुःखमिति अनात्मरुपो विषयसंकल्प एव दुःखम्।।

दुःख क्या है? अनात्म रुप (नश्वर) विषयों का संकल्प (विचार) करना दुःख है।

स्वर्ग इति च सत्संसर्गः स्वर्गः।

स्वर्ग क्या है? सत् (अनश्वर) का संसर्ग (समागम) ही स्वर्ग है।

नरक इति च असत्संसारविषयजनसंसर्ग एव नरकः।।

नरक क्या है? असत् (नश्वर) संसार के विषयों में लिप्त व्यक्तियों का संसर्ग ही नरक है।

बन्ध इति च अनाद्यविद्यावासनया जातोऽहमित्यादि संकल्पो बन्धः।।

बन्धन क्या है? अनादि अविद्या की वासना द्वारा उत्पन्न इस प्रकार का विचार कि 'मै हूँ' यही बन्धन है।

पितृमातृसहोदरदारा पत्यगृहारामक्षेत्रममता संसारावरण संकल्पो बन्धः।।

माता–पिता, भाई, पत्नि, पुत्र, गृह, उद्यान, खेत आदि में मोह होना तथा संसार को अपना मानना बंधन हैं।

कर्तृत्वादि अहंकारसंकल्पो बन्धः।।

कर्तापन के अहंकार का विचार ही बंधन है।

देवमनुष्यादि उपासनाकामसंकल्पो बन्धः।।

मनोकामना की पूर्ति के संकल्प पूर्वक की गई देवताओं और मनुष्यों की उपासना भी बंधन है।

वर्णाश्रमधर्मकर्मसंकल्पो बन्धः।।

वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) और आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास) का पालन करते हुए धर्म–कर्म के संकल्प ही बंधन हैं।

यागव्रत तपोदान विधिविधान ज्ञानसंकल्पो बन्धः।।

यज्ञ, व्रत, तप और दान के विधि–विधान तथा ज्ञान के संकल्प ही बंधन हैं।

संकल्पमात्रसंभवो बन्धः।।

संकल्प मात्र से जो संभव है वह सभी बंधन स्वरुप है।

मोक्ष इति च नित्यानित्यवस्तुविचारात् अनित्यसंसार सुखदुःख विषयसमस्तक्षेत्र ममताबन्धक्षयो मोक्षः।।

मोक्ष क्या है? जब नित्य और अनित्य वस्तुओं के विचार से नश्वर संसार के सुख–दुःखात्मक सभी विषयों से ममतारुपी बंधन नष्ट हो जाएं उस स्थिति को मोक्ष कहते हैं।

उपास्य इति च सर्वशरीरस्थ चैतन्यब्रह्मप्रापको गुरुरुपास्यः।।

उपास्य कौन है? समस्त शरीरों में स्थित चैतन्य ब्रह्म को प्राप्त कराने वाला गुरु ही उपास्य है।

शिष्य इति च विद्याध्वस्तप्रपंच अवगाहितज्ञान अवशिष्टं ब्रह्मैव शिष्यः।।

शिष्य कौन है? जिसके हृदय में विद्या द्वारा प्रपंच नष्ट हो चुके हैं और ब्रह्म ज्ञान ही शेष रह गया है वही शिष्य है।

विद्वानिति च सर्वान्तरस्थ स्वसंविद्रूपविद् विद्वान्।।

विद्वान कौन है? सबके अन्तर में स्थित आत्म तत्त्व के स्वरुप को जानने वाला ही विद्वान है।

मूढ इति च कर्तृत्वादि अहंकारभावारुढो मूढः।।

मूर्ख कौन है? कर्तापन आदि के भाव में लिप्त व्यक्ति ही मूर्ख है।

आसुरमिति च ब्रह्मविष्णु ईशान इन्द्रादीनाम् ऐश्वर्यकामनया निरशन जपाग्नि होत्रादिषु अन्तरात्मानं संतापयति च अति उग्र रागद्वेषविहिंसा दम्भादि अपेक्षितं तप आसुरम्।।

असुरत्व क्या है? जो ब्रह्मा, विष्णु, ईशान और इन्द्र आदि देवों के ऐश्वर्य की कामना पूर्वक व्रत, जप, यज्ञ आदि में अंतरात्मा को तपाए तथा अति उग्र राग, द्वेष, हिंसा, दंभ आदि से युक्त होकर तप करे वह आसुरी तप कहलाता है।

तप इति च ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्येति अपरोक्षज्ञानाग्निना। ब्रह्मादि ऐश्वर्याशासिद्ध संकल्पबीजसन्तापं तपः।।

तप क्या है? 'ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है' इस प्रत्यक्ष ज्ञान की अग्नि से ब्रह्मा आदि देवों के ऐश्वर्य प्राप्त करने के संकल्प–बीज को जला डालना ही तप है।

परमं पदमिति च प्राण इन्द्रियादि अन्तःकरणगुणादेः। परतरं सच्चिदानन्दमयं नित्यमुक्तब्रह्मस्थानं परमं पदम्।।

परम पद क्या है? प्राण, इन्द्रियों, अन्तःकरण आदि से भिन्न सच्चिदानन्द स्वरुप नित्य मुक्त ब्रह्म का स्थान परम पद है।

ग्राह्यमिति च देशकालवस्तुपरिच्छेदराहित्य चिन्मात्रस्वरुपं ग्राह्यम्।।

ग्राह्य क्या है? देश, काल, वस्तु की मर्यादा से परे चिन्मात्र स्वरुप जो है वही ग्राह्य (ग्रहण करने योग्य) है।

अग्राह्यमिति च स्वस्वरुपव्यतिरिक्त मायामयबुद्धीन्द्रियगोचर जगत्सत्यत्व चिन्तनमग्राह्यम्।।

अग्राह्य क्या है? निज स्वरुप से परे, माया से व्याप्त बुद्धि तथा इन्द्रिय गम्य जगत को सत्य मानना ही अग्राह्य है।

संन्यासीति च सर्वधर्मान्परित्यज्य निर्ममो निरहंकारो भूत्वा ब्रह्मेष्टं शरणमुपगम्य तत्त्वमसि अहं ब्रह्मास्मि सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचनेत्यादि महावाक्यार्थ अनुभवज्ञानाद् ब्रह्मैव अहमस्मीति निश्चित्य निर्विकल्पसमाधिना स्वतन्त्रो यतिश्चरति स संन्यासी स मुक्तः स पूज्यः स योगी स परमहंसः सोऽवधूतः स ब्राह्मण इति।।

सन्यासी कौन है? जो समस्त धर्मों को छोड़कर ममता और अहंकार का परित्याग करके इष्ट ब्रह्म की शरण में आकर 'तू वही है', 'मै ब्रह्म हूँ', 'जो कुछ भी यह है वह सब निश्चित ही ब्रह्म है', 'ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है', आदि इन महावाक्यों के अर्थ को जानकर और उनका अनुभव करके 'मैं ब्रह्म हूँ' इस प्रकार का निश्चय करके निर्विकल्प समाधि में लीन रहकर परम स्वतंत्र और यतिस्वरुप रहता है वह सन्यासी है, वह मुक्त है, वह पूज्य है, वह योगी है, वह परमहंस है, वह अवधूत है और वह ब्राह्मण है।

इदं निरालम्बोपनिषदं योऽधीते गुरु अनुग्रहतः सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्तते पुनर्नाभिजायते पुनर्नाभिजायत इत्युपनिषत्।।

इस निरालम्बं उपनिषद का जो अध्ययन करता है, गुरु कृपा से वह अग्निपूत (अग्नि की तरह पवित्र) हो जाता है, वह वायुपूत हो जाता है। फिर उसका पुनः आगमन नहीं होता, वह बार–बार जगत में जन्म नही लेता। निरालम्बं उपनिषद का यही रहस्य है।